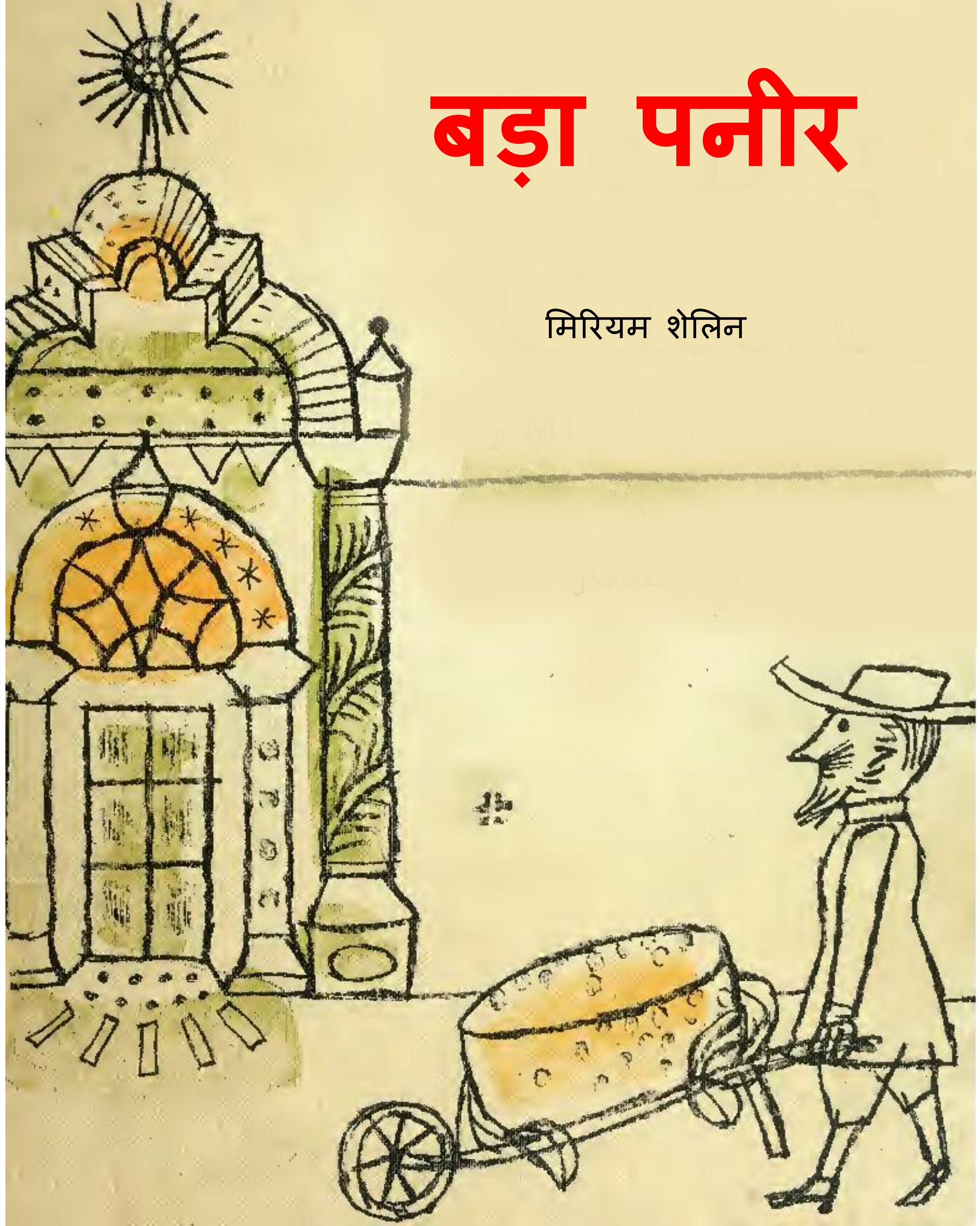
बड़ा पनीर

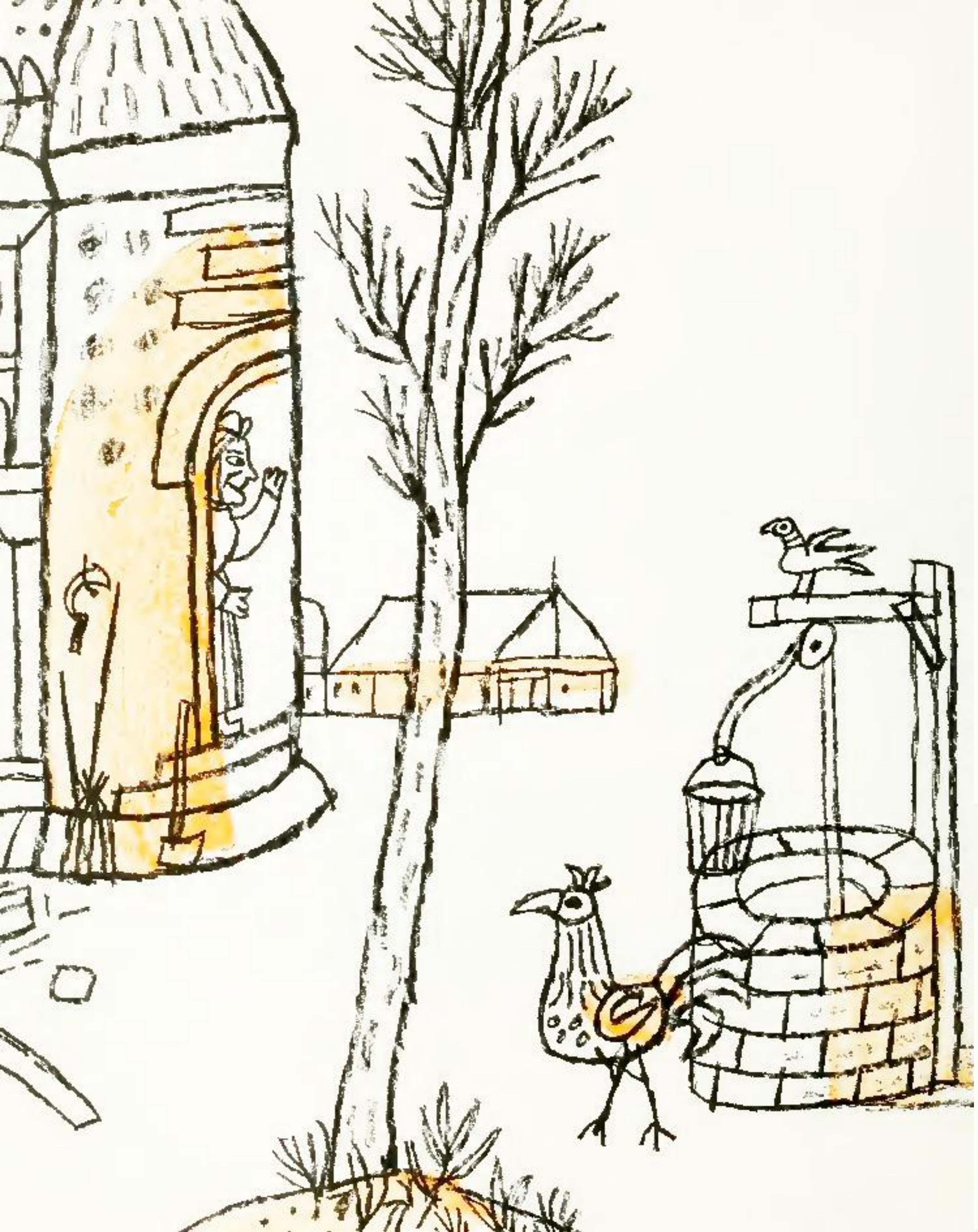
मिरियम शेलिन



एक समय की बात है कि एक किसान ने एक बड़ा पनीर बनाया. पनीर गोल, मुलायम और पीला था. जितने भी पनीर किसान ने बनाए थे यह उन सबसे अच्छा था.

“निःसंदेह,” किसान ने कहा, “इस देश में इससे बढ़िया पनीर आजतक किसी ने नहीं बनाया होगा.”





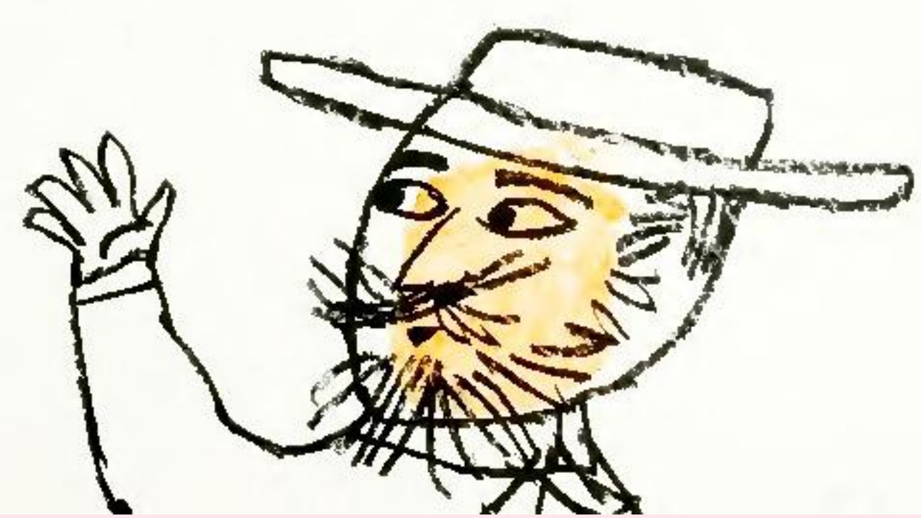
"मुझे लगता है कि तुम सही कह रहे हो," उसकी पत्नी ने पनीर को सूँघते हुए कहा. "इसे बाज़ार ले जाओ. इसका अच्छा दाम मिल जाएगा."

"नहीं," किसान ने कहा. "इस देश का यह सबसे बढ़िया पनीर है- इसे कौन खाना चाहिए? कोई साधारण व्यक्ति! नहीं," उसने गर्व से कहा. "यह पनीर मैं राजा को भेंट करूँगा."

"राजा!" पत्नी ने कहा, "हमारे राजा को?"

"बेशक," किसान ने कहा. "और इसे खाने के पश्चात राजा भी कहेंगे कि जितने भी पनीर उन्होंने खाये थे, यह उन सब से अधिक स्वादिष्ट है."

उसने बड़े पनीर को बड़े ध्यान से एक ठेले पर रख दिया. उसकी पत्नी ने बर्फ के समान सफेद सूती कपड़े से उसे ढक दिया. और ठेले को धकेलता हुआ किसान सड़क पर आ गया.



वह अधिक दूर न गया था कि उसकी भेंट एक चरवाहे से हुई जो अपनी बकरियों के झुंड को घास चरने के लिए ले जा रहा था.

“दोस्त, तुम उस ठेले में क्या ले जा रहे हो?” चरवाहे ने उससे पूछा.

“एक बड़ा पनीर,” किसान ने ठेले को रोकते हुए कहा. “मैं इसे राजा को भेंट करने जा रहा हूँ क्योंकि इस देश में अब तक का यह सबसे बढ़िया पनीर है.”

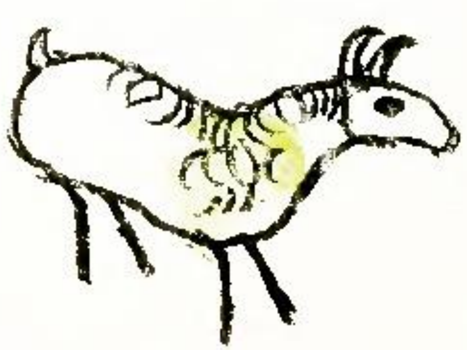
“निःसंदेह,” चरवाहे ने कहा. “क्या यह बकरी के दूध से बना है?”

“नहीं,” किसान ने कहा. “गाय के दूध से.”

“फिर यह,” चरवाहे ने कहा, “अब तक का सबसे बढ़िया पनीर कैसे हो सकता है? सबसे अच्छा और स्वादिष्ट पनीर तो हमेशा बकरी के दूध से ही बनता है.”

“कैसे हो सकता है?” किसान ने गुस्से से कहा, “यह है सबसे बढ़िया पनीर!” उसने पनीर पर रखा कपड़ा हटा दिया. कपड़े के नीचे पनीर था- सुंदर, मुलायम और पीला.

“यह अच्छा दिखाई दे रहा है,” चरवाहे ने कहा. “लेकिन क्या तुमने इसका स्वाद चखा था?”





“बिलकुल नहीं,” किसान ने कहा. “तुम देख सकते हो कि यह अभी भी पूरा है.”

“फिर तुम कैसे जानते हो कि यह अब तक का सबसे बढ़िया पनीर है?” चरवाहे ने कहा. “हमें अभी, इसी समय, इसका स्वाद चखना चाहिए,” उसने एक चाकू निकालते हुए कहा.

“रुको!” किसान ने चिल्लाकर कहा. “पनीर से एक टुकड़ा काट कर मैं राजा को कैसे भेंट कर सकता हूँ?”

“लेकिन यह जाने बिना कि पनीर का स्वाद सबसे बढ़िया है, तुम उसे राजा को भेंट में कैसे दे सकते हो?” चरवाहे ने आग्रहपूर्वक कहा.

“तुम ठीक कह रहे हो,” किसान ने कहा. “काटो इसे.”

चरवाहे ने एक बड़ा तिकोना टुकड़ा काटा और फिर उसके दो भाग किए, एक किसान के लिए और एक अपने लिए.

दोनों ने पनीर चखा.

“निःसंदेह,” चरवाहे ने कहा. “इस पनीर का स्वाद उत्तम है.”

वह दोनों एक पेड़ की छाया में बैठ गए. बकरियाँ उनके आसपास घास चरने लगीं.





जब दोनों ने अपना-अपना पनीर खा लिया तो किसान उठ खड़ा हुआ. "मुझे चलना चाहिए," उसने कहा.

"मुझे भी," चरवाहे ने कहा. "जाओ मित्र, मैं स्वीकार करता हूँ कि बकरी के दूध से या गाय का दूध से जितना अच्छा पनीर बना सकता है तुमने उससे भी बढ़िया पनीर बनाया है."

किसान प्रसन्नता से खिल उठा. उसने पनीर को कपड़े से ढक दिया और अपने रास्ते चल पड़ा.

जिस रास्ते पर वह जा रहा था, वह रास्ता पहाड़ी और घाटी से होता हुआ, गेहूँ के खेतों के बीच से जाता था. चलते हुए अभी अधिक समय न बीता था कि रात घिर आई.

वह एक सराय के पास पहुँचा.

"मैं रात यहीं बिताऊँगा," उसने सोचा. "कुछ थोड़ा खाकर रात भर अच्छे से सोऊँगा, और सुबह-सवेरे राजमहल की ओर चल पड़ूँगा."





उसने सराय का दरवाज़ा खोला और एक आरामदायक कमरे के भीतर आ गया. कमरे के अंदर मेज़-कुर्सियां सजी हुई थे और एक ओर अँगीठी में खूब आग जल रही थी. आग के सामने एक मोटा आदमी बैठा था जो हँसमुख लगता था.

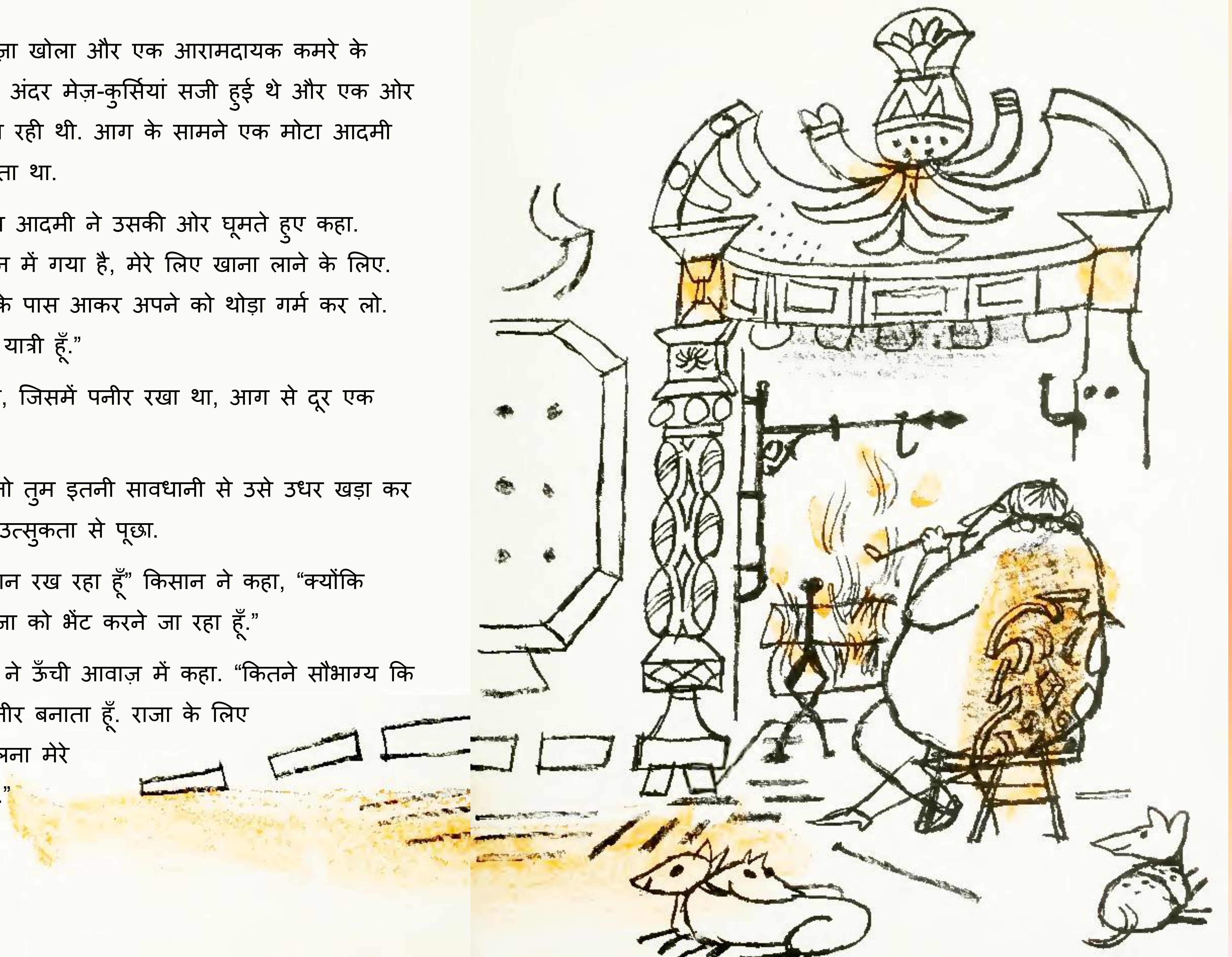
“भीतर आ जाओ,” उस आदमी ने उसकी ओर घूमते हुए कहा. “सराय का मालिक किचन में गया है, मेरे लिए खाना लाने के लिए. लेकिन मित्र, यहाँ आग के पास आकर अपने को थोड़ा गर्म कर लो. मैं भी तुम्हारी तरह एक यात्री हूँ.”

किसान ने अपना ठेला, जिसमें पनीर रखा था, आग से दूर एक जगह खड़ा कर दिया.

“उस ठेले में क्या है जो तुम इतनी सावधानी से उसे उधर खड़ा कर रहे हो?” उस आदमी ने उत्सुकता से पूछा.

“मैं सच में इसका ध्यान रख रहा हूँ” किसान ने कहा, “क्योंकि उसमें पनीर है जो मैं राजा को भेंट करने जा रहा हूँ.”

“सच में,” उस आदमी ने ऊँची आवाज़ में कहा. “कितने सौभाग्य कि बात है क्योंकि मैं भी पनीर बनाता हूँ. राजा के लिए पनीर बनाने वाले से मिलना मेरे लिए सम्मान की बात है.”



"ओह, मैं वह नहीं हूँ," किसान ने संकोच से कहा. "मैं तो एक साधारण किसान हूँ. लेकिन मैंने इतना बढ़िया पनीर बनाया है कि मैंने इसे राजा को भेंट करने का निर्णय लिया है."

"राजा को?" उस यात्री ने कहा. "लेकिन राजा के पास तो महल में देश के सबसे माहिर पनीर बनाने वाले हैं."

"लेकिन जो पनीर मैंने बनाया है ऐसा स्वादिष्ट पनीर इस देश में आजतक किसी ने न बनाया होगा."

"सबसे स्वादिष्ट?" यात्री ने उसके शब्द दोहराये, "तुम कैसे जानते हो?"

"मैं जानता हूँ," किसान ने अभिमान के साथ कहा, "और चरवाहा भी मेरी बात से सहमत था."

"चरवाहा!" यात्री ने कहा. "एक चरवाहे को बकरियों के बारे में जानकारी होगी. उसे क्या पता कि राजा को कैसा पनीर स्वादिष्ट लगता है?"



"मेरी बात सुनो," यात्री ने आगे कहा, "बैठ जाओ. थोड़ा शांत हो जाओ. मेरे साथ भोजन कर मुझे सम्मानित करो. जब हम पेट भर भोजन कर लेंगे फिर हम," अपनी ओर संकेत करते हुए उसने कहा, "फिर हम तुम्हारा पनीर चख कर देखेंगे. क्योंकि जब आदमी को भूख लगी हो तब पनीर का स्वाद चखना गलत होता है. जब भूख लगी होती है तब हर चीज़ स्वादिष्ट लगती है. नहीं, पनीर की सुगंध और स्वाद का आनंद लेने के लिए पेट भरा होना चाहिए. मुझ से पुछो, मित्र, मैं सब जानता हूँ."

"लेकिन मैं अपना पनीर राजा को भेंट करना चाहता हूँ," किसान ने कहा.

"निःसंदेह," यात्री ने कहा. "डरो मत. स्वाद चखने के लिए हम थोड़ा-सा पनीर ही लेंगे. किसी को पता भी न चलेगा."

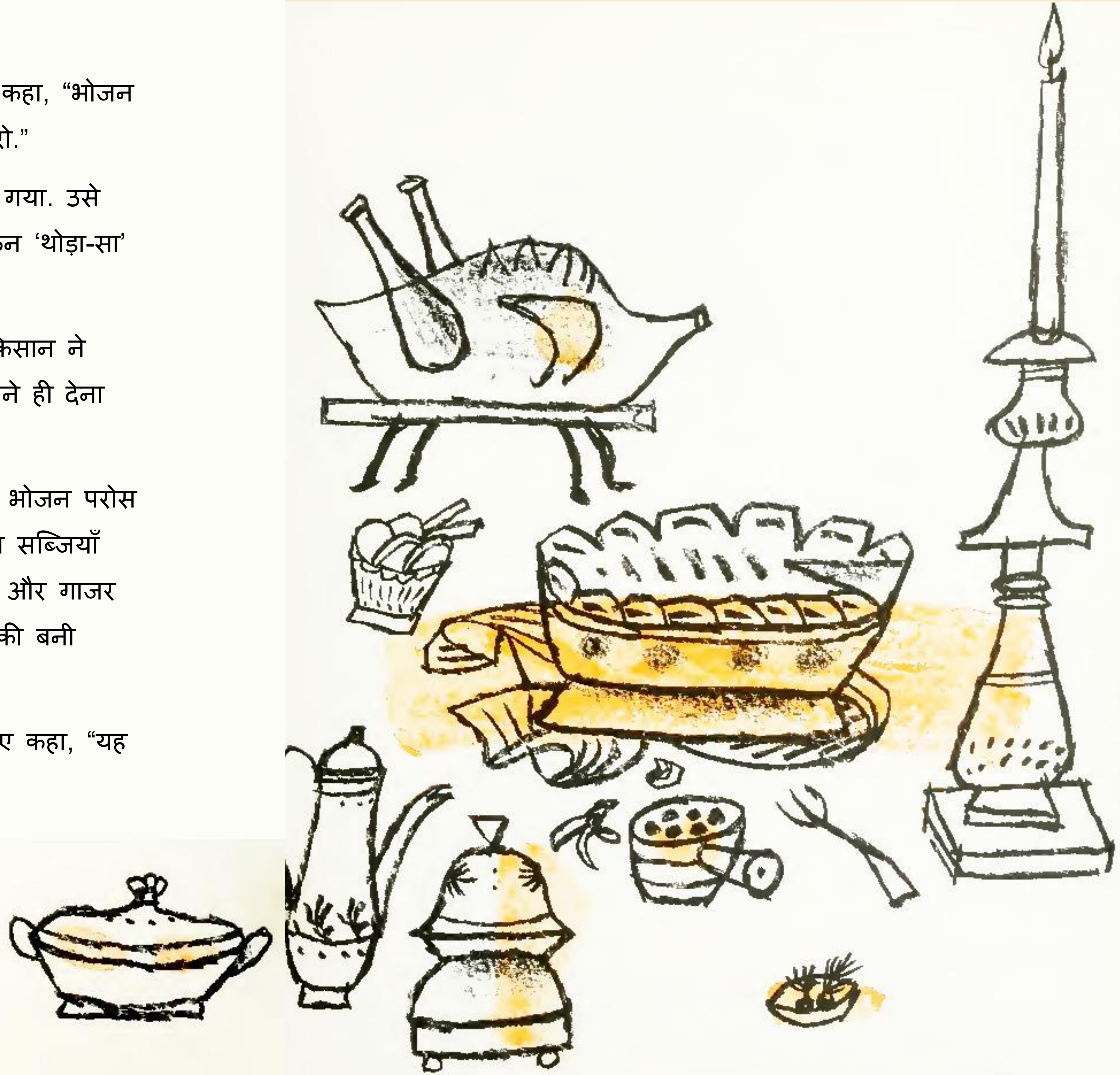
“आ जाओ,” यात्री ने किसान को बुलाते हुए कहा, “भोजन आ रहा है. मेरे पास बैठ जाओ और भोजन करो.”

किसान ने आह भरी और यात्री के पास बैठ गया. उसे लगा कि यात्री उसका भला ही चाहता था. लेकिन ‘थोड़ा-सा’ से उसका क्या तात्पर्य था?

“मैं अशिष्ट व्यवहार कैसे कर सकता हूँ?” किसान ने अपने आप से कहा. “मुझे पनीर का स्वाद चखने ही देना होगा.”

उसी समय सराय के मालिक ने गरमा-गरम भोजन परोस दिया. एक तश्तरी में भूनी हुई बतख थी. भरवा सब्जियाँ और मशरूम थे. मक्खन में बनाई गई फलियां और गाजर थी एक ट्रे में ताज़ा ब्रेड थी. पीने के लिए घर की बनी झागदार बियर थी.

“अह,” किसान ने अपनी बेल्ट ढीली करते हुए कहा, “यह तो स्मरण रखने योग्य भोजन था.”



“और अब,” यात्री ने कुर्सी पर सीधे बैठते हुए कहा, “हमने पेट भर कर खाना खा लिया है. अब हम तुम्हारा पनीर चखेंगे.”

“पनीर?” किसान ने हिचकते हुए कहा, “क्या इसी समय पनीर चखोगे? पेट थोड़ा ज़्यादा ही नहीं भरा हुआ है?”

“निःसंदेह मेरा पेट पूरी तरह भर गया है,” यात्री ने कहा. “लेकिन अगर तुम्हारा पनीर सच में बहुत स्वादिष्ट है जैसा तुम कह रहे हो तो उसके स्वाद का आनंद तो भरे हुए पेट पर ही आएगा.

“लाओ अपना पनीर!”

किसान ने पनीर पर रखे कपड़े को हटाया.

“देखने में तो बहुत बढ़िया लग रहा है,” यात्री ने कहा.

वह पनीर पर झुक कर उसे सूंघने लगा.

“सुगंध बहुत अच्छी है,” उसने कहा.

फिर उसने एक छोटा सा टुकड़ा काटा. उसने उसके नर्म भाग को दांत से कुतरा. फिर पनीर को दबा कर अपने मुंह रखा और चबाने लगा.





"इसका स्वाद," मेज़ पर मुक्का मारते हुए उसने कहा, "इसका स्वाद लाजवाब है! मैंने ऐसा पनीर कभी नहीं चखा-अपना बनाया हुआ भी नहीं."

उसने अपने हाथ झाड़े.

"क्या मैं एक और टुकड़ा ले लूँ."

"प्लीज़ ले लो," किसान ने कहा. "प्लीज़ ले लो."

"म्म्म्म," मोटे यात्री ने भरे हुए मुंह से आवाज़ निकाली. "म्म्म्म. मेरे मित्र तुम सही कह रहे थे. यह पनीर तो राजा के ही योग्य है. क्या मैं एक और टुकड़ा काट कर चख लूँ?"

"निःसंदेह," किसान ने कहा क्योंकि उसे समझ न आ रहा था कि वह क्या कहे.

"यह अंतिम टुकड़ा है," एक बड़ा टुकड़ा काटते हुए यात्री ने कहा. "लेकिन," उसने फिर कहा, "क्या तुम पनीर चखना नहीं चाहते? तुम ने एक टुकड़ा भी नहीं लिया!"

"ओह, मेरा पेट बिलकुल भरा हुआ है," किसान ने दुखी मन से कहा, उसने देखा कि उसका बड़ा पनीर छोटा, और छोटा होता जा रहा था.



"चलो," मोटे यात्री ने कहा, "इसे ले जाओ."

किसान ने झटपट पनीर को कपड़े से ढक दिया और ठेले को दूर ले गया.

चूँकि यात्री ने पनीर चख लिया था अब किसान से बातचीत करने में उसकी कोई दिलचस्पी न थी. वह अँगीठी में जल रही आग को देखता रहा और पाइप पीता रहा.

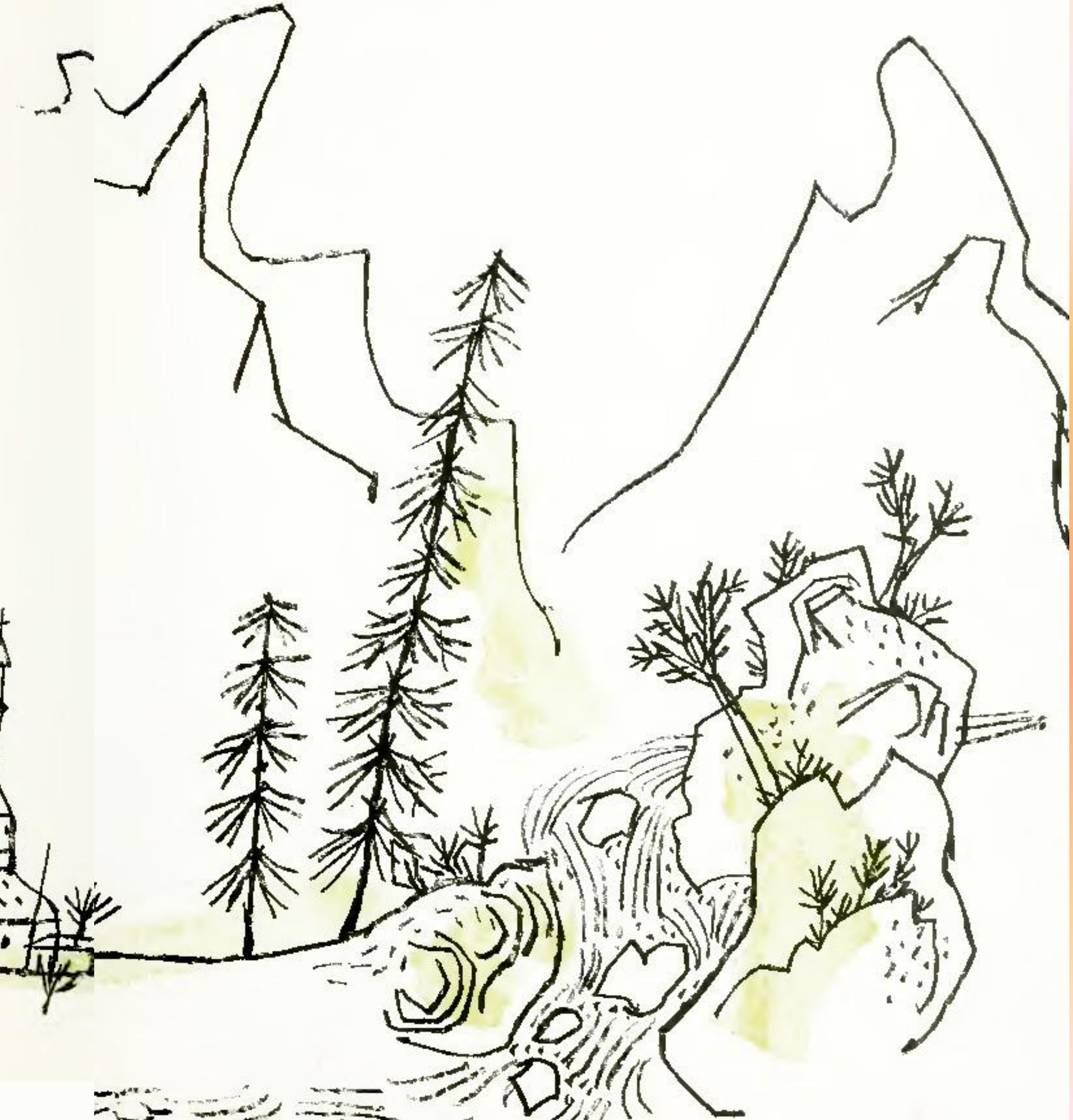
किसान ने उसे अलविदा कहा और सोने के लिए अपने कमरे में चला गया. सुबह जब वह उठा, यात्री जा चुका था. किसान ने अकेले ही नाश्ता किया. फिर अपना ठेला ले कर वह अपने रास्ते चल पड़ा.

दिन बहुत सुहावना था और धूप खिली हुई थी. रास्ता सीधा था. सुनहरी और ऊँची मकई के खेतों के साथ-साथ किसान तेज़ गति से चल रहा था. हवा में मकई के पौधे इधर-उधर झूल रहे थे.

“रास्ता सीधा है और दिन भी सुहावना है. मैं शीघ्र ही पहुँच जाऊँगा,” किसान ने सोचा.

सारी सुबह वह चलता रहा. दुपहर के समय उसे लगा कि आगे का रास्ता सीधा नहीं था, बल्कि घुमावदार था और उन मोड़ों को देखकर लगता था कि उनपर चलने वाले किसी उतावली में न थे.





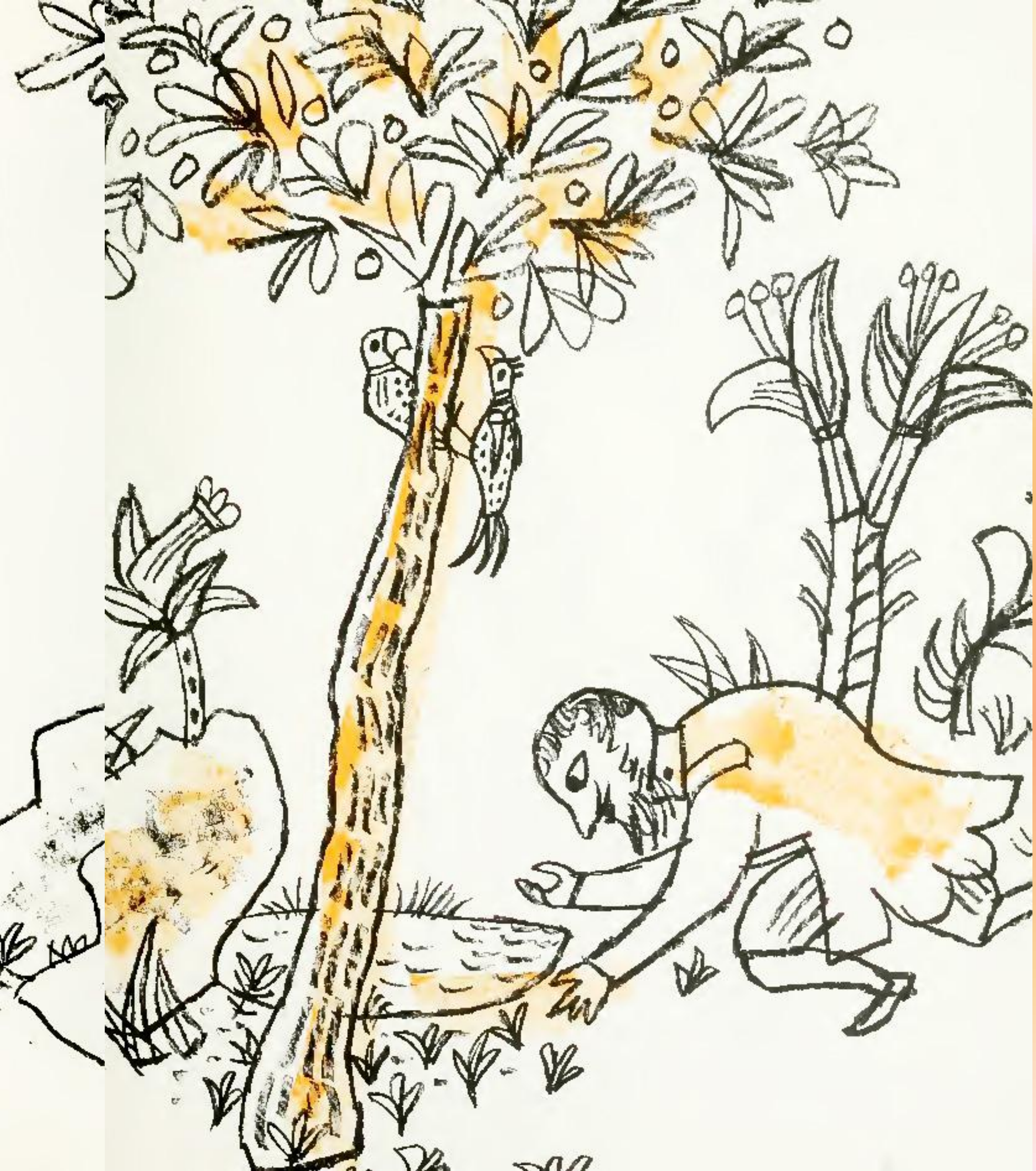
अगर रास्ते में कोई बड़ा पेड़ था तो रास्ता उसके पास से घूम कर जा रहा था. अगर रास्ते में कोई छोटी नदी आ जाती तो रास्ता तेज़ी से घूमकर उस नदी के साथ चल रहा था, और रास्ते पर चलते-चलते यात्री नदी में पानी बहने के आवाज़ लगातार सुन सकता था.

किसान एक जगह रुका और उसने नदी का शीतल पानी पीया और अपने मुंह को भी धोया. फिर आराम करने के लिए वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया.

“इतने अच्छे रास्ते पर मैं पहले कभी नहीं चला,” उसने सोचा.

उसने अपने आसपास देखा. “क्या यही रास्ता राजमहल की ओर जाता है?” उसने सोचा. “यह पतला घुमावदार रास्ता है? मुझे तो लगा था कि जो पथ राजमहल की ओर जाता होगा वह खूब चौड़ा और सीधा होगा ताकि राजा के दस सैनिक एक साथ घोड़ों पर सवार होकर उस पर चल सकें. लगता है कि पीछे रास्ते में मैंने कहीं कोई गलत मोड़ ले लिया है.”









वह ऐसा सोच ही रहा था कि एक आदमी उस रास्ते पर चलता हुआ उधर आया. वह सूअर पालने वाला था जिसने एक हैट पहन रखी थी और अपने डंडे के संकेत से अपने सुअरों को एक लाइन में चला रहा था. आरंभ में तो उस आदमी ने किसान को देखा भी नहीं.

“अरे सुनो भाई,” किसान ने पुकार कर कहा. “क्या यही रास्ता राजमहल की ओर जाता है?”

“सिर्फ यही रास्ता,” सूअर पालने वाला ने किसान की ओर देखते हुए और मुस्करा कर कहा. लेकिन उसका ध्यान उस काले धब्बों वाले गुलाबी सूअर की तरफ था जो एक जगह काई पर लेट कर सो गया था.

“धन्यवाद,” किसान ने कहा. “देखो,” किसान ने मन ही मन सोचा कि यह पहला आदमी है जिसने मुझसे पूछा नहीं कि ठेले में क्या है. अच्छी बात है अन्यथा दूसरों की भांति यह भी पनीर का विशेषज्ञ निकलता.”



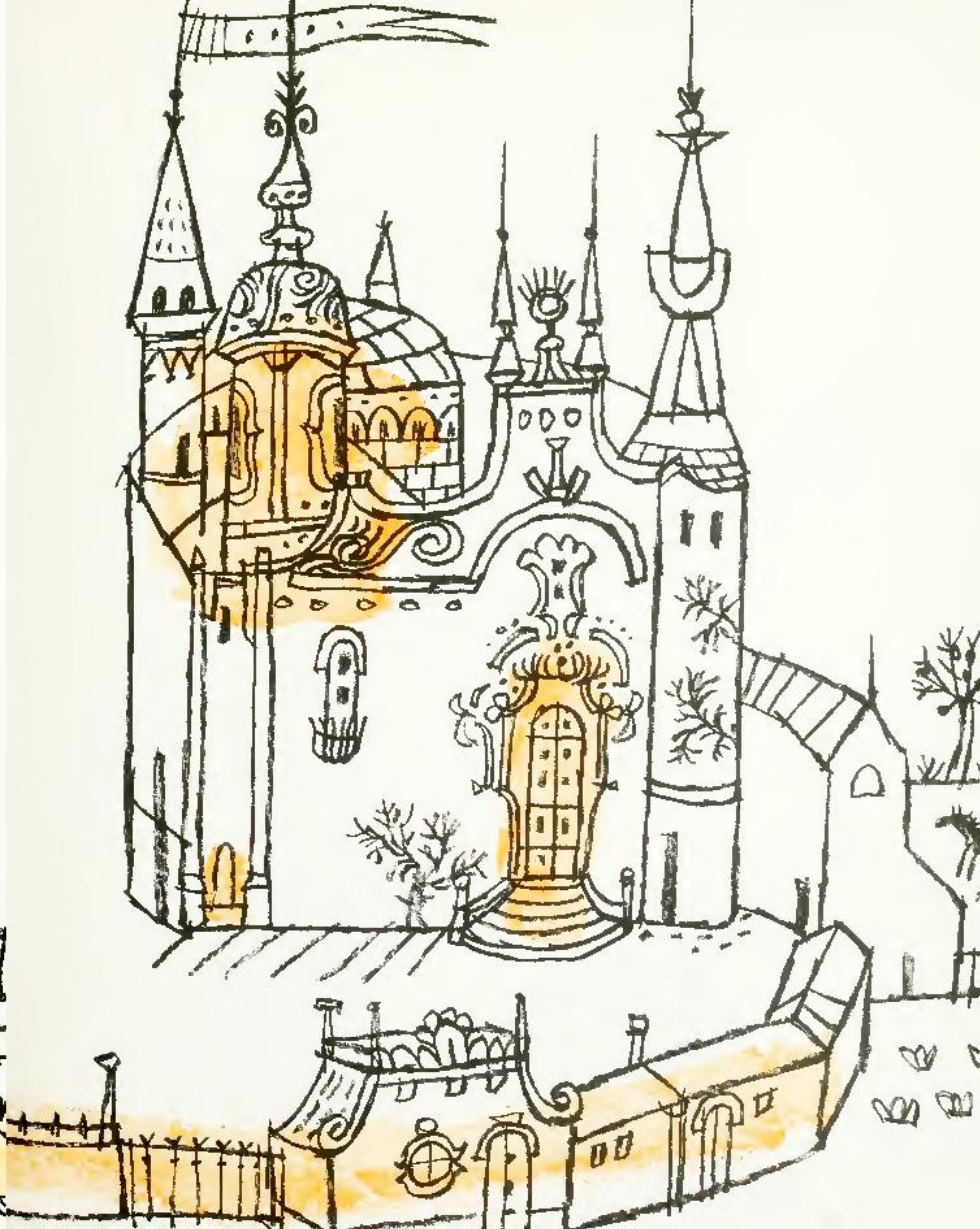
किसान ने ठेले को पकड़ा और रास्ते पर धीरे-धीरे आगे चलने लगा. और शीघ्र ही दूर उसे आकाश को छूते हुए महल के चार मीनार दिखाई दिए.

“राजा का महल!” उसने कहा. “आखिरकार मैं पहुँच ही गया. क्या मैं घबराया हुआ हूँ? नहीं-आश्चर्य है, लेकिन मैं घबराया हुआ नहीं हूँ.

“ज़रा सोचता हूँ. अब क्या करना होगा? मैं राजा के पास जाऊँगा. मैं खूब झुक कर उनका अभिवादन करूँगा और अपना पनीर उन्हें भेंट करूँगा. फिर मैं लौट आऊँगा. हाँ-सब इतना सरल ही तो है.”

उसने अपनी कमीज़ ठीक की, अपने मोज़े ऊपर किए. और शीघ्र ही वह महल के फाटक के सामने खड़ा हो गया.





“तुम कौन हो? और ठेले में तुम क्या लेकर आए हो?” फाटक के पास खड़े सैनिक ने पूछा. दिन में गर्मी थी इसलिए सैनिक ने अपने कॉलर का बटन खोल रखा था और अपनी फर्र का हैट उतार रखी थी.

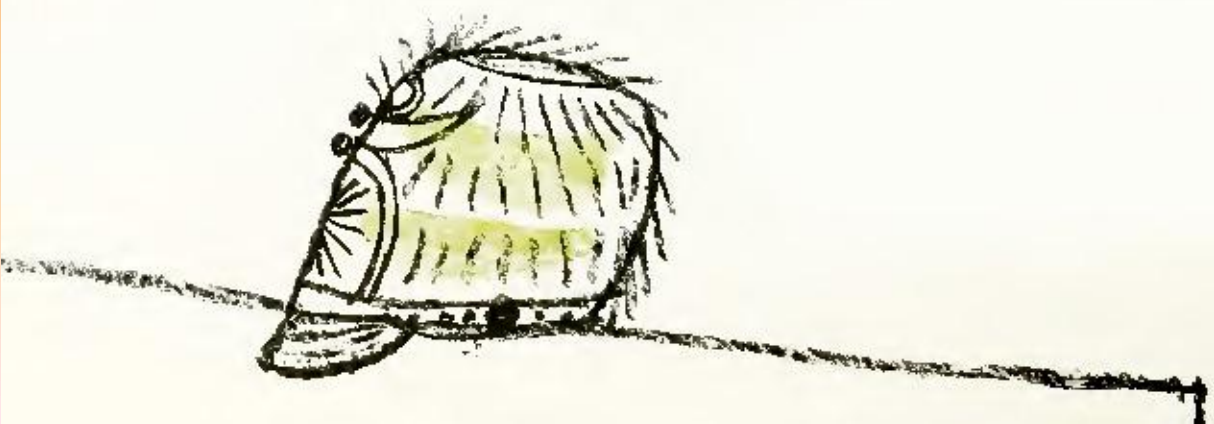
“मैं एक किसान हूँ,” किसान ने कहा, “यह पनीर मैंने राजा के लिए बनाया है.”

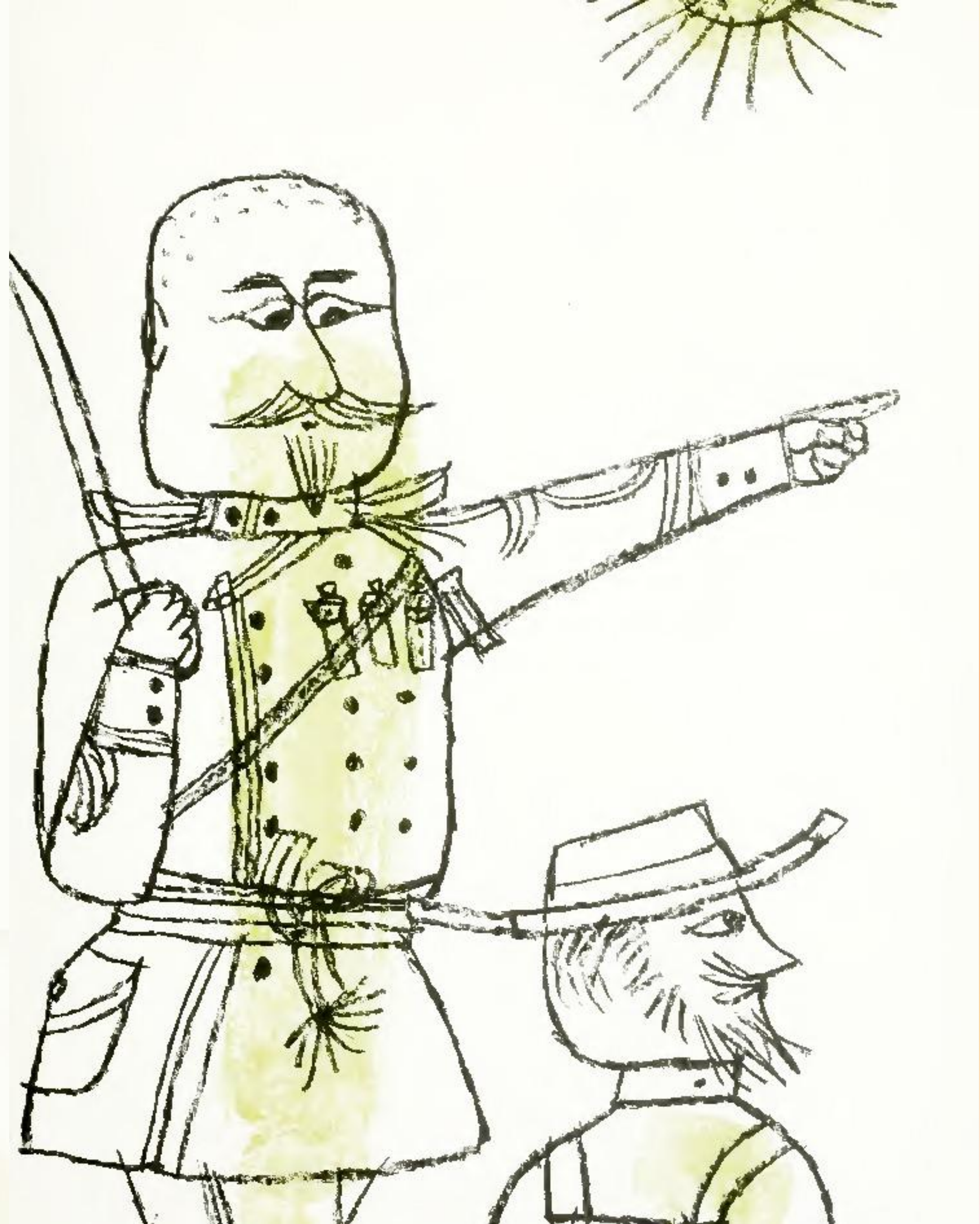
“उस दरवाज़े पर जाओ,” सैनिक ने कहा. उसने सहन की ओर संकेत किया जहाँ तीन युवा फलियाँ काट रहे थे और एक औरत कोई घोल बना रही थी. “वहाँ शाही किचन है.”

“लेकिन यह पनीर मैं स्वयं राजा को भेंट करना चाहता हूँ,” किसान ने दृढ़ता से कहा.

“फिर उस दरवाज़े की ओर जाओ,” सैनिक ने एक मेहराबदार दरवाज़े की तरफ संकेत करते हुए कहा.

किसान ठेले को धकेलता हुआ सहन के पार उस मेहराबदार दरवाज़े की ओर आया.





उसने अपने को एक बड़े हॉल में पाया. वह बिलकुल अकेला था. लेकिन हॉल के दूसरी तरफ स्थित एक बंद दरवाज़े के पीछे से आती आवाज़ें उसने सुनी.

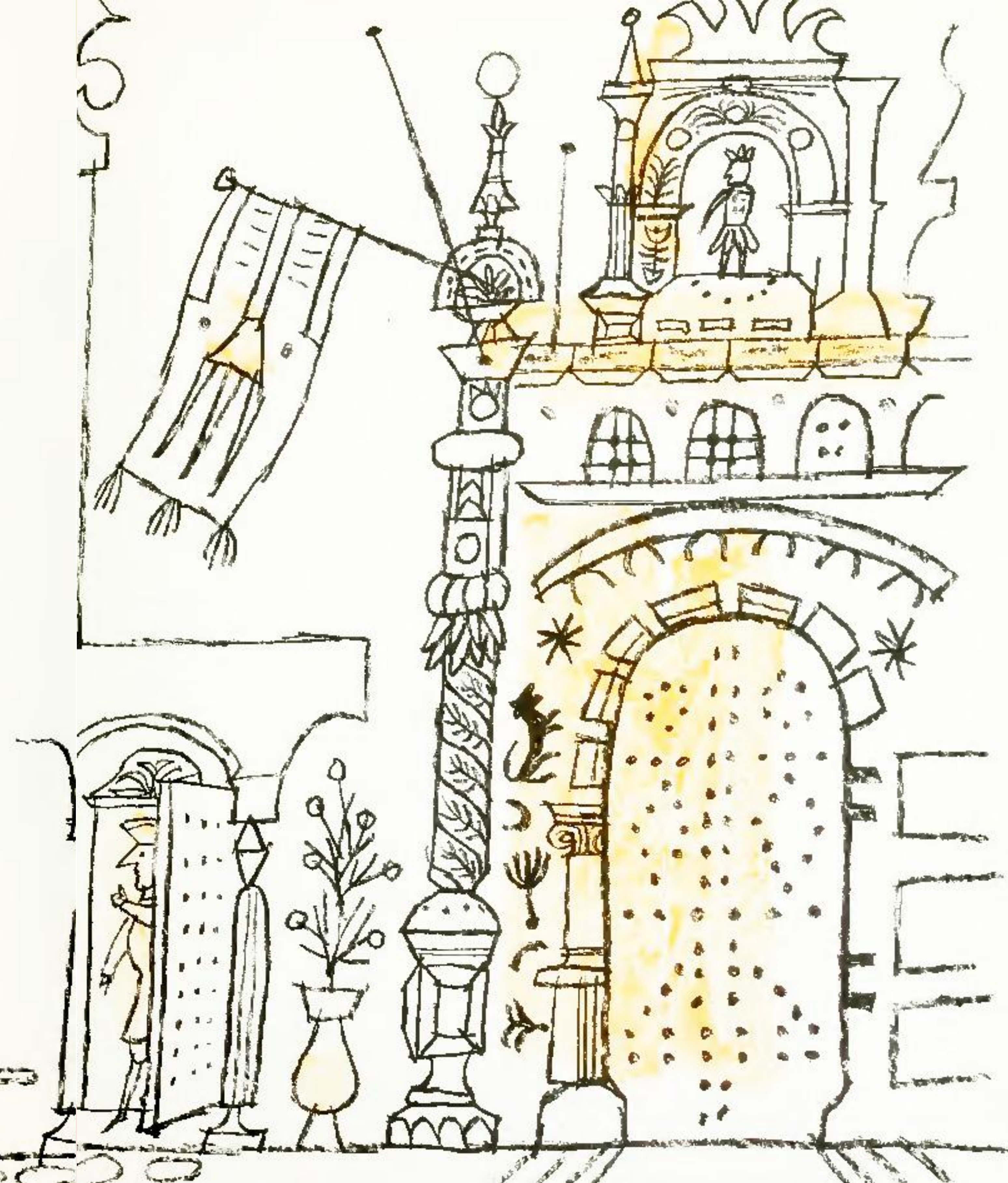
"हे भगवान," उसने सोचा. "क्या मैं घबरा रहा हूँ? पर हर नया अनुभव पहली बार ही होता है."

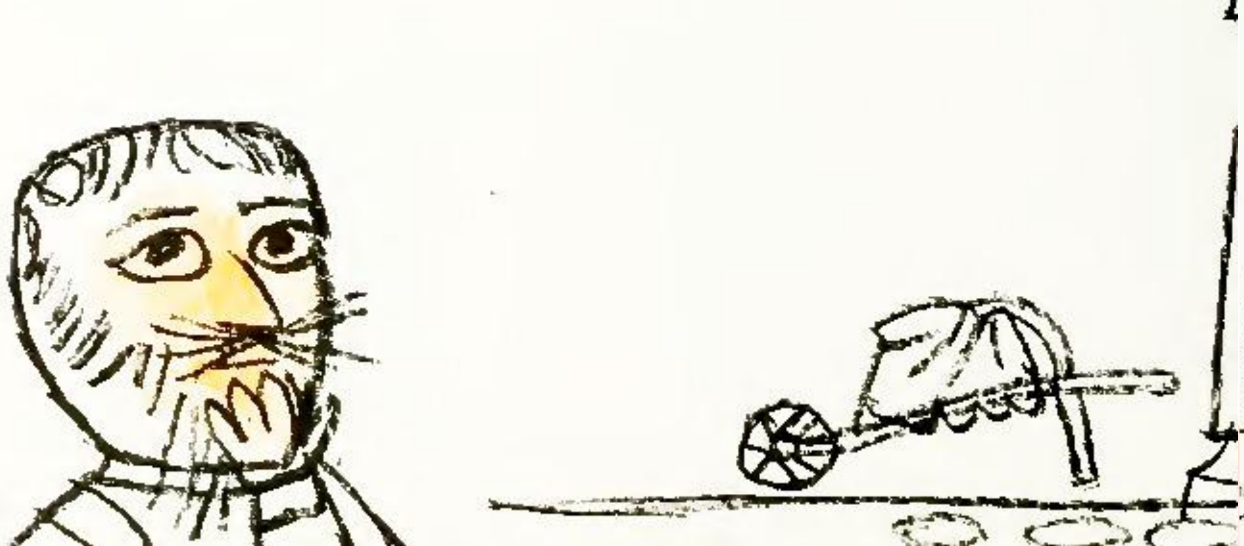
एक बड़ी सफेद कुर्सी के किनारे पर वह बैठ गया.

"अहम, अहम." उसने कई बार अपना गला साफ किया, लेकिन इतनी ऊँची आवाज़ में नहीं कि कोई सुन लेता. उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या करना चाहिए.

तभी दूसरी ओर का दरवाज़ा खुला और एक आदमी हॉल में आया. रेशम का बनी उसकी वेशभूषा, जिस पर रिबन भी लगे थे, बहुत सुंदर थी. उसकी हैट में पक्षी का पंख लगा था.

"अह," किसान और उसके ठेले को देखकर उसने आश्चर्य से कहा. "वह क्या है?"





"अरे, मैं भी कितना गंवार हूँ जो राजा के अपने हॉल में ठेला लेकर आ गया," उसने सोचा.

"एक बड़ा पनीर," उसने कहा. "मैं यह राजा को भेंट करना चाहता हूँ. इसके लिए मुझे अपना ठेला लाना पड़ा. पनीर बहुत भारी है....."

"एक पनीर, तुम ने कहा" उस आदमी ने दिलचस्पी लेते हुए कहा. "अह, पनीर का एक छोटा टुकड़ा भी स्वादिष्ट लगेगा."

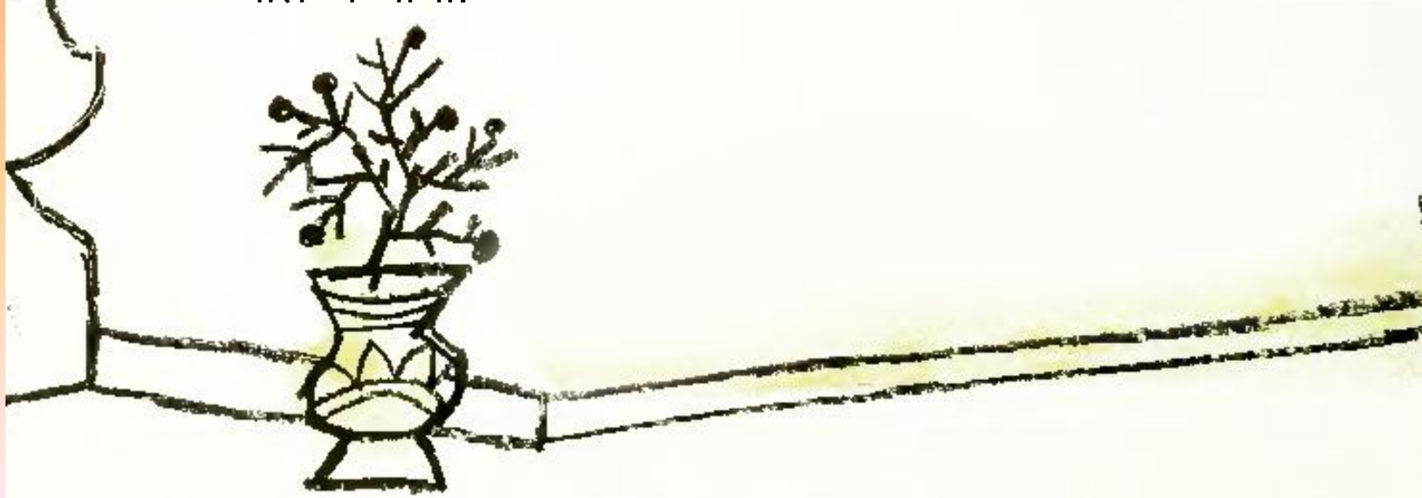
"इसके अतिरिक्त" उसने कहा, "मैं राजा का खाना चखता हूँ. जो कुछ भी राजा खाते हैं उसे पहले मैं चखता हूँ. यह जांचने के लिए की सब ठीक है या नहीं, तुम समझ रहे हो न. अच्छा होगा कि मैं इसे अभी चख लूँ."

वह झुका और अपने छोटे चाकू से पनीर का टुकड़ा काट कर मुंह में डाल लिया.

"निःसंदेह," भरे हुए मुंह से उसने कहा. "यह अच्छा पनीर है."

"क्या अब मैं इसे राजा को भेंट कर सकता हूँ?" किसान ने पूछा.

खाना चखने वाले का मुंह इतना भरा हुआ था कि वह कुछ बोल न पाया.





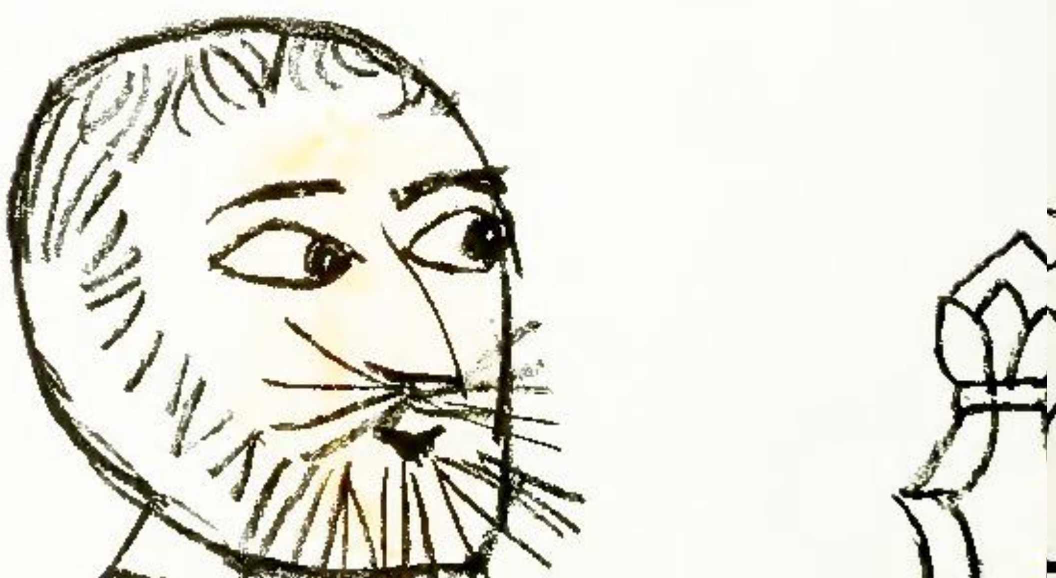
तभी दूसरी तरफ का दरवाज़ा फिर खुला. एक और आदमी बाहर आया. उसकी गहरे लाल रंग की पोशाक, जिससे सुनहरी गुच्छे लटक रहे थे, पहले आदमी की पोशाक से अधिक सुंदर थी.

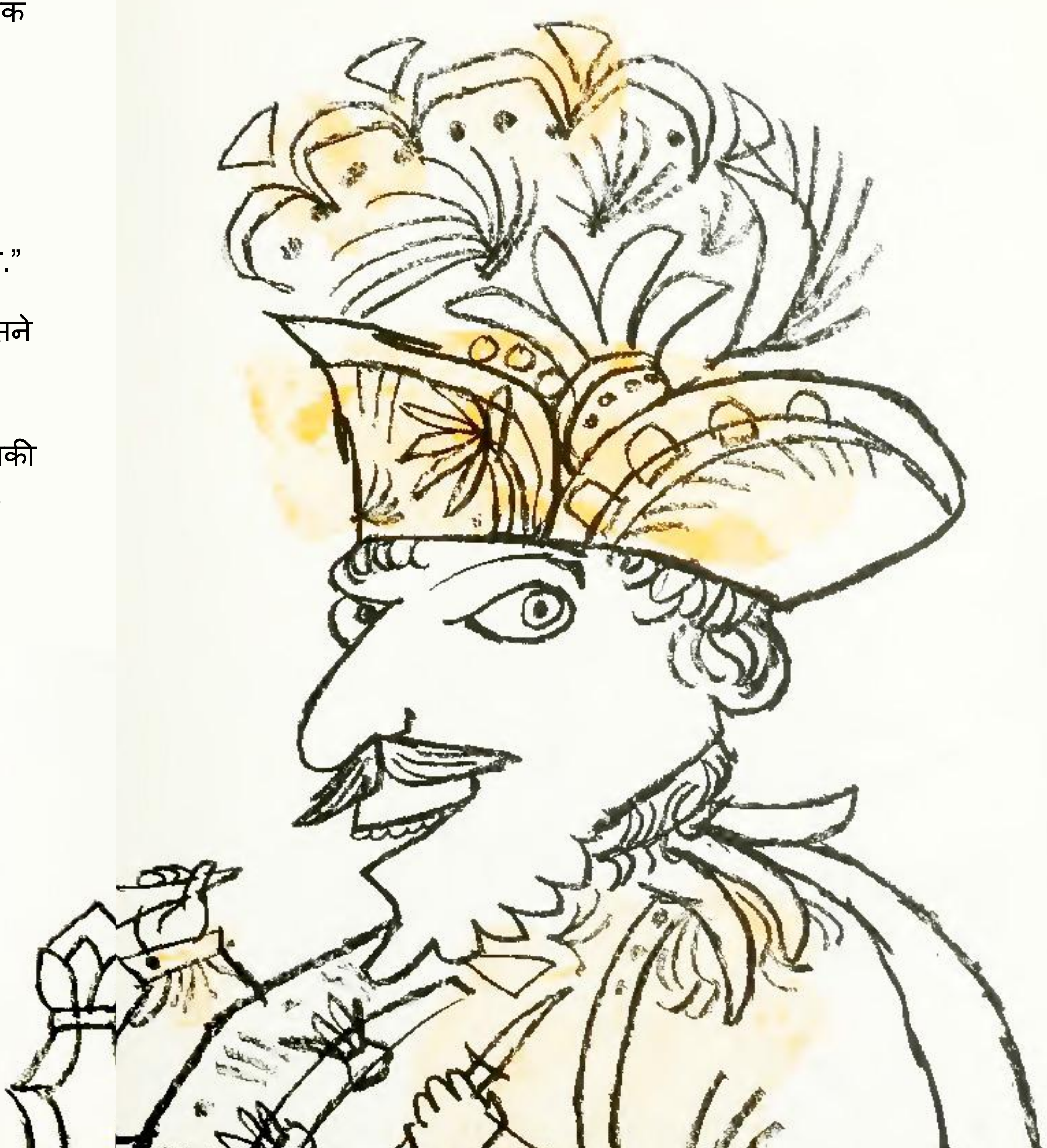
"तुम क्या कर रहे हो?" किसान और उसका ठेला और पहले आदमी के हाथ में छोटा चाकू देखकर दूसरे ने आश्चर्य से पूछा.

"पनीर," पहले आदमी ने झिझकते हुए कहा, "बहुत बढ़िया पनीर."

"अह," दूसरे आदमी ने सोने का छोटा चाकू खोलते हुए कहा. उसने पनीर का एक टुकड़ा काट कर चखा.

"अरे, अरे," किसान ने सोचा. पर वह मुस्कराया क्योंकि अब उसकी घबराहट कम हो गई थी. "अगर इन्हें मेरा पनीर पसंद आया है तो निश्चय ही राजा को भी पसंद आएगा," उसने सोचा.





फिर राजा का एक और आदमी आया और उसके बाद एक और, फिर एक और. शीघ्र वहाँ सात आदमी इकट्ठे हो गए. सबने सुंदर पोशाकें पहन रखी थीं और सबके पास छोटे-छोटे उत्कृष्ट चाकू थे और सब पनीर चख रहे थे.

किसान प्रसन्नता से उन्हें देख रहा था, हालांकि वह अब थोड़ा चिंतित भी था.

“कितनी खुशी की बात है सबको पनीर अच्छा लगा,” वह सोचने लगा. “लेकिन मेरे बड़े पनीर से राजा के लिए कितना बचेगा?”





कुछ ही देर में एक और आदमी दूसरी ओर के दरवाज़े से वहाँ आया और अपने पीछे उसने दरवाज़ा बंद कर दिया.

उसकी ऊँचाई औसत थी, लगभग किसान की ऊँचाई के बराबर. उसका चेहरा लाल था जैसा उन लोगों का होता है जो अपना अधिकांश समय घरों से बाहर खुले में बिताते हैं. उसके कपड़े उतने सुंदर नहीं थे जितने अन्य लोगों के थे.

“क्या हो रहा है?” उसने पूछा. सब पीछे हट गए.

“पनीर, श्रीमान,” किसान ने आगे आकर कहा. “इस देश में अब तक का बना सबसे बढ़िया पनीर. और यह पनीर किसे खाना चाहिए? कोई साधारण व्यक्ति को नहीं, यह पनीर तो एक राजा के योग्य है. इसलिए मैं यहाँ आया हूँ. मैं इसे अपने राजा को भेंट करना चाहता हूँ.”

“निःसंदेह!” लाल चेहरे वाले आदमी ने पनीर के ऊपर रखा कपड़ा उठाते हुए कहा.

किसान घूर कर पनीर को देखने लगा. उसके बड़े पनीर का कितना भाग बचा था? आधा भी नहीं. एक चौथाई भी नहीं. पनीर के चूरे के बीच एक छोटा टुकड़ा पड़ा था.



लाल चेहरे वाला आदमी झुका और अंतिम टुकड़े को उठाने लगा.

“रुको!” यह सोचे बिना ही कि वह कहाँ था उसने चीखते हुए कहा. “रुको, रुको, रुको!”

सब आश्चर्य से देखने लगे.

"क्षमा चाहता हूँ," किसान ने दुखी भाव से कहा. "मेरा अर्थ था कि यह पनीर राजा के लिए है. आप पनीर का अंतिम टुकड़ा खाना चाहते हैं. ठीक है, आप ले लें," दुखी मन से मुड़ते हुए उसने कहा. "अब कोई फर्क नहीं पड़ता. मैं इतनी दूर से चल कर आया था लेकिन यह बचा-खुचा टुकड़ा मैं अपने राजा को भेंट नहीं कर सकता. आप," उसने कहा, "आप इसे खा लें."

सुंदर वेशभूषा पहने सातों व्यक्ति धीरे से पीछे हट गए. लाल चेहरे वाला व्यक्ति ठेले के पास अकेला खड़ा रहा.

"लेकिन मैं ही राजा हूँ," उस आदमी ने धीमे से कहा.

"राजा!" किसान ने कहा. "मैं बार-बार क्षमा मांगता हूँ!"

एक घुटने पर झुक कर उसने अपना सिर नीचे कर लिया और ऐसा करते हुए उसने ठेले को लगभग उलट ही दिया.

"उठो," राजा ने कहा, "खड़े हो जाओ. बार-बार क्षमा? किस बात के लिए बार-बार क्षमा? राजा के प्रति अपनी स्वामीभक्ति के लिए? राजा को अपना सबसे बढ़िया पनीर भेंट करने की अपनी कामना के लिए? उठो अभी," राजा ने कहा. "क्षमा मांगने की कोई आवश्यकता नहीं है."



किसान सीधा खड़ा हो गया. लज्जा से उसका चेहरा लाल हो गया था.

“क्या पनीर का अंतिम बचा हुआ टुकड़ा मैं खा सकता हूँ?” राजा ने मुस्कराते हुए कहा. “मुझे पनीर अच्छा लगता है.”

“निःसंदेह, राजा,” किसान ने कहा.

राजा ने पनीर का टुकड़ा चखा.

“अपने जीवन में मैंने इतना स्वादिष्ट पनीर आजतक नहीं खाया!” राजा ने कहा. “मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ.”

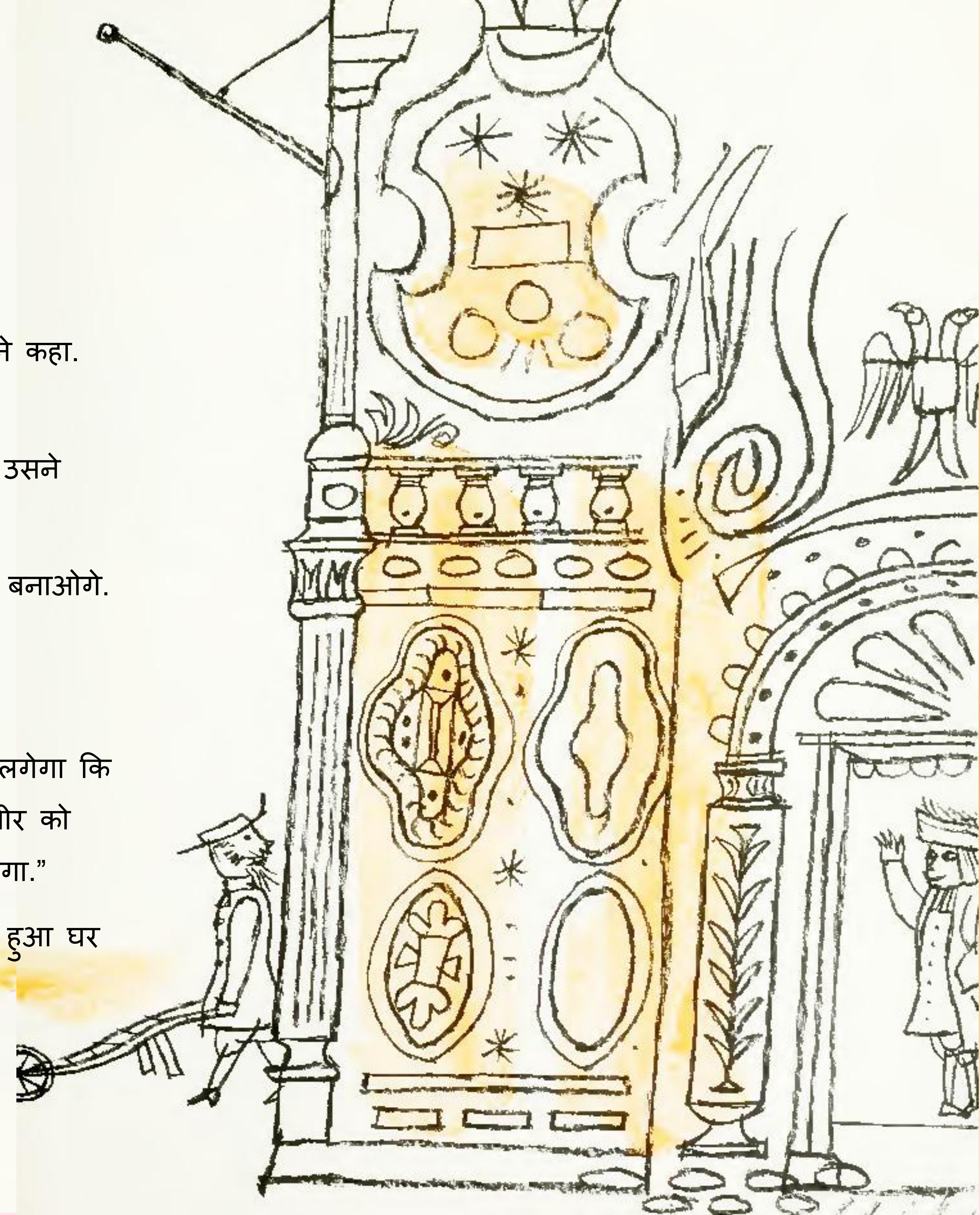
किसान प्रसन्नता से खिल उठा. “लेकिन बहुत छोटा टुकड़ा ही बचा था,” उसने झिझकते हुए कहा. “मुझे इस बात का दुख है.”

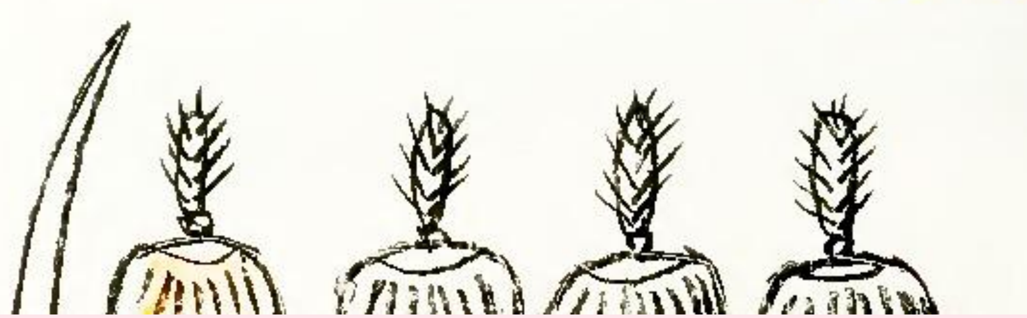
“देखो,” राजा ने कहा, “यह अंतिम पनीर नहीं है जो तुम अपने जीवन में बनाओगे. क्यों, नहीं है न?”

“नहीं राजा, यह अंतिम पनीर नहीं है,” किसान ने कहा.

“तो ठीक है,” राजा ने कहा, “जब भी तुम ऐसा पनीर बनाओगे जो तुम्हें लगेगा कि मुझे खाना चाहिए, उसे सीधा मेरे पास ले आना. और किसी को भी उस पनीर को पहले चखने न देना,” राजा ने आगे कहा. “मैं तुम्हारे निर्णय पर भरोसा करुंगा.”

किसान ने विनम्रता से अपनी सहमति व्यक्त की. फिर ठेले को धकेलता हुआ घर चल दिया.



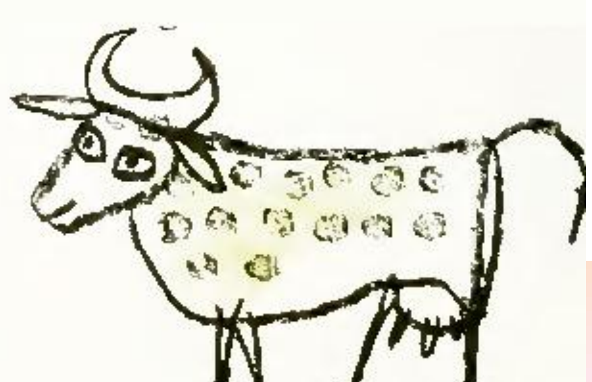






घर पहुँच कर वह कितना प्रसन्न हुआ. उसने अपनी पत्नी को यात्रा को विवर्ण सुनाया. फिर वह खेतों में, अपनी मुर्गियों के साथ, अपनी भूरी गाय के साथ, अपनी ऐस्पैरेगस और कद्दुओं के साथ व्यस्त हो गया. और निःसंदेह उसने कई बार पनीर भी बनाया.

उसका पनीर बढ़िया होता था, पीला, मुलायम और गोल. लेकिन कोई भी पनीर राजा को भेंट करने योग्य नहीं होता था.







कई महीने बीत गए. लगभग एक साल. फिर एक दिन किसान दौड़ा-दौड़ा अपनी पत्नी के पास आया.

“मैंने एक बना लिया है!” वह चिल्लाया. “आखिरकार!”

“राजा के योग्य?” पत्नी ने पूछा.

“हाँ, राजा के योग्य!”

कोई शब्द बोले बिना, उन्होंने बड़े पनीर को एक ठेले में रखा. किसान की पत्नी ने पनीर को एक चमकते, सफेद सूती कपड़े से ढक दिया.

और किसान ठेले को धकेलता हुआ राजमहल की ओर चल दिया.



न तो चरवाहे ने, न ही हंसमुख यात्री ने और न ही राजा के अधिकारियों ने वह पनीर चखा.

यह पनीर किसान ने राजा को भेंट किया, गोल और पूरा का पूरा.

यह उतना ही स्वादिष्ट था जितना पहला पनीर था. यह पनीर एक राजा के योग्य था!

यह बात स्वयं राजा ने ही कही थी.

और वह तो जानते ही थे!